The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 3 | March 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

सामाजिक विज्ञान के अनुसन्धान में केस स्टडी का महत्व

Dr. Bhuwaneshwar Manjhi

Ph.D., Political Science, Sido Kanhu Murmu University, Dumka, Jharkhand, Mail-krbhanu72@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19543237

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 28-03-2026

Published: 10-04-2026

Keywords:

केस स्टडी, सामाजिक अनुसन्धान, साक्षात्कार, अवलोकन, अनुसूची, केस इतिहास

ABSTRACT

केस स्टडी (Case Study) किसी सामाजिक विज्ञान इकाई के गहन और व्यापक वैज्ञानिक अध्ययन के लिए गुणात्मक डेटा एकत्र करने हेतु प्रयुक्त एक महत्वपूर्ण विधि है। यह सामाजिक इकाई एक व्यक्ति, एक परिवार, एक समुदाय, एक समूह या यहाँ तक कि एक संपूर्ण समाज भी हो सकता है। केस स्टडी, केस इतिहास से काफी भिन्न है, जो व्यक्तिगत जानकारी के अभिलेखन पर केंद्रित है। केस स्टडी की विभिन्न विधियाँ जैसे व्यक्ति, समुदाय, सामाजिक समूह, संगठन और घटनाएँ, उपयुक्त तकनीकों, अवलोकन, साक्षात्कार, दस्तावेज और अभिलेख जैसे द्वितीयक डेटा का उपयोग करके शोध समस्या के उद्देश्यों के आधार पर उपयोग की जाती है। केस स्टडी में डेटा के मुख्य स्रोतों में जीवन इतिहास, व्यक्तिगत दस्तावेज, पत्र और अभिलेख, आत्मकथाएँ, साक्षात्कार और अवलोकन के माध्यम से प्राप्त जानकारी शामिल हैं। केस स्टडी स्थापित सिद्धांत का खंडन करते हुए एक सामाजिक इकाई के गहन अध्ययन और गहन विश्लेषण की सुविधा प्रदान करती है। इसका व्यापक रूप से मनोविज्ञान, शिक्षा, समाजशास्त्र, गृहविज्ञान, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में उपयोग किया जाता है। इसका उद्देश्य किसी सामाजिक इकाई की सामाजिक घटना या सामाजिक घटना का संपूर्ण और विस्तृत विवरण प्राप्त करना है। केस स्टडी में. डेटा संग्रह की किसी भी गुणात्मक विधि जैसे साक्षात्कार, अवलोकन का उपयोग करके कई स्रोतों से डेटा एकत्र किया जा सकता है और इसमें दस्तावेज, कलाकृतियाँ आदि भी शामिल हो सकते हैं। केस स्टडी विधि डेटा संग्रह का एक प्रकार है जो व्यापकता के बजाय गहन समझ पर आधारित है। केस स्टडी वर्णनात्मक हो सकती है क्योंकि हम अवलोकन करते हैं और विवरण में लिखते हैं। साथ ही,

यह खोजपूर्ण भी हो सकती है, हालांकि, केस अध्ययन में कई कारणों से कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं, जिनमें डेटा में असंगतता, निष्कर्षों को दोहराना संभव नहीं होना, प्रमुख और सही सूचनादाताओं का साक्षात्कार, अन्वेषक की विशेषज्ञता, अध्ययन किए जा रहे सैद्धांतिक मुद्दों और एकत्रित डेटा के बीच बातचीत की निरंतर निगरानी, और डेटा की व्याख्या पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता शामिल है।

उद्देश्य :– केस स्टडी के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. प्रारम्भिक जाँच अन्वेषण के रूप में इसका प्रयोग करना, क्योंकि यह उन चरों, प्रक्रियाओं तथा सम्बन्धों को प्रकाश में ला सकता है जिनके लिए अधिक सघन जाँच वांछित हो। इस अर्थ में यह भविष्य के अनुसंधान के लिए प्राक्कल्पना का स्रोत भी हो सकता है।
2. घटना की गहन जाँच करना और विस्तृत जनसंख्या के विषय में जिससे वह इकाई सम्बद्ध है, सामान्यीकरण स्थापित करने की दृष्टि से उसका गहनता से विश्लेषण करना है।
3. वस्तुपरक साक्ष्य प्राप्त करना जिससे अधिक सामान्य निष्कर्ष निकालने में मदद मिलती है।
4. सार्वभौमिक सामान्यीकरण को नकारना। सिद्धान्त निर्माण में एक मामला महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधित्व करने की जाँच की दिशा केन्द्रित करने में सहायक हो सकता है।
5. केस स्टडी स्वयं में एक आदर्श, अनोखा व रोचक मामले के रूप में प्रयोग करना है।

केस स्टडी के प्रयोग में लाने के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–1

- अनुसंधान के विषय की संरचना, प्रक्रिया व जटिलताओं के विषय में गहन व विस्तृत जानकारी प्राप्त करना है।
- प्राक्कल्पना का निर्माण करना।
- अवधारणा बनाना।
- चरों को परिभाषित करना।
- मात्रात्मक निष्कर्षों का विस्तार करना।
- मात्रात्मक अध्ययन की उपयोगिता का परीक्षण करना है।

सामाजिक अनुसन्धान :–सामाजिक अनुसन्धान से तात्पर्य सामाजिक घटनाओं और मानव व्यवहार के बारे में व्यवस्थित तरीके से ज्ञान प्राप्त करना है। यह ऐसी विधि है, जिसका उपयोग सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा सामाजिक प्रवृतियों सिद्धान्तों और समस्याओं को समझने के लिए किया जाता है। इसमें डेटा एकत्र करना, उसका विश्लेषण करना और

समाज के बारे में नऐ निष्कर्ष निकालना शामिल है, जिसके लिए व्यवस्थित विधियों जैसे सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन और अनुसूची का उपयोग किया जाता है।

सामाजिक शोध की प्रकृति वैज्ञानिक है, क्योंकि इसमें वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग किया जाता है। शोध का मुख्य लक्ष्य वैज्ञानिक निष्कर्षों की प्राप्ति सामान्यीकरण तथा नियमों का प्रतिपादन करना है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु वैज्ञानिक विधि या वैज्ञानिक कार्य विधि का सहारा लेना आवश्यक है। सामाजिक अनुसंधान में केस स्टडी का महत्वपूर्ण स्थान है।2

केस स्टडी के प्रकार :–3

1. **ऐतिहासिक केस स्टडी**–यह अध्ययन किसी संगठन या व्यवस्था के दीर्घ कालीन विकास का पता लगाता है। बचपन से लेकर जवानी तक एक वयस्क अपराधी का अध्ययन इसका एक उदाहरण है। इस प्रकार का अध्ययन साक्षात्कारों, अभिलेखों तथा दस्तावेजों पर अधिक निर्भर करता है।
2. **अवलोकन केस स्टडी** –यह अध्ययन एक शराबी, अध्यापक, छात्र, यूनियन नेता, कोई गतिविधि घटना या लोगों के विशेष समूह के अवलोकन पर केन्द्रित होता है। यद्यपि इस प्रकार के अध्ययन में अनुसंधानकर्ता शायद ही पूर्ण भागीदार या पूर्ण अवलोकनकर्ता होते हैं।
3. **मौखिक इतिहास केस स्टडी**–यह आमतौर पर किसी व्यक्ति द्वारा किये गए कथन होते हैं जो कि अनुसंधानकर्ता किसी व्यक्ति से गहन साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र करता है। उदाहरणार्थ, एक मादक पदार्थ सेवन करने वाला व्यक्ति या एक शराबी, या एक वेश्या, या रिटायर्ड व्यक्ति जो अपने बेटे के साथ परिवार में समायोजन करने में असफल रहता है। इस उपागम का प्रयोग उत्तरदाताओं के सहयोग और स्वभाव पर अधिक निर्भर करता है।
4. **स्थितीय केस स्टडी**–इस प्रकार के अध्ययन में विशेष घटनाओं का अध्ययन होता है। घटना से संबंधित सभी व्यक्तियों के विचार लिये जाते हैं। उदाहरणार्थ, एक साम्प्रदायिक दंगा–यह दो भिन्न धर्मो के दो व्यक्तियों के बीच संघर्ष से कैसे शुरू हुआ, किस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति ने उस स्थान पर उपस्थित अपने–अपने धर्म के लोगों का समर्थन माँगा, पुलिस को कैसे सूचित किया गया, किस प्रकार पुलिस ने एक विशेष धार्मिक समूह के लोगों को गिरफ्तार किया, किस प्रकार अभिजात वर्ग ने दखलन्दाजी की और पुलिस पर दबाव डाला, जनता और मीडिया ने कैसे प्रतिक्रिया की आदि। इन सभी विचारों को एक साथ रखकर घटना का गहनता से अध्ययन किया जाता है जो कि उसे समझने में महत्त्वपूर्ण योगदान करता है।
5. **चिकित्सकीय केस स्टडी**–इस उपागम का प्रयोग किसी विशेष व्यक्ति को गहराई से समझने के उद्देश्यों से किया जाता है जैसे की अस्पताल में एक मरीज, जेल में एक बन्दी, सुरक्षा गृह में एक महिला, स्कूल में एक समस्याग्रस्त बच्चा आदि। इन अध्ययनों में विस्तृत साक्षात्कार, अवलोकन, अभिलेखों और प्रतिवेदनों की जाँच आदि शामिल हैं।

6. **बहु–केस स्टडी**–यह एक केस स्टडी का संग्रह होता है या एक प्रकार की पुनरावृत्ति, अर्थात् बहु–प्रयोग। उदाहरणार्थ, हम तीन केस स्टडी लेकर पुनरावृत्ति के तर्क पर उनका विश्लेषण कर सकते हैं। तर्क यह है कि प्रत्येक मामला या तो विरोधी निष्कर्ष देगा या समान निष्कर्ष देगा। नतीजा या तो प्रारम्भिक प्रस्थापना का समर्थन करेगा या फिर अन्य मामलों से पुनः परीक्षण और पुर्नमूल्यांकन की आवश्यकता को दर्शाएगा। बहु–प्रकरण अभिकल्प का लाभ यह है कि साक्ष्य अधिक सशक्त हो सकते हैं। फिर भी इस उपागम में अधिक प्रयत्न और समय की आवश्यकता होती हैं।

केस स्टडी की तकनीक :–4

I. **अवलोकन** – यह एक व्यवस्थित डेटा संग्रह पद्धति है। शोधकर्ता प्राकृतिक परिवेश या प्राकृतिक रूप से घटित होने वाली स्थितियों में लोगों का अध्ययन करने के लिए अपनी सभी इंद्रियों का उपयोग करते हैं। इसी क्षेत्र में अवलोकन भी शामिल है। किसी परिवेश या सामाजिक परिस्थिति में लंबे समय तक संलग्न रहना है।

II. **साक्षात्कार** – यह किसी व्यक्ति से मूल्यांकन या जानकारी उत्पन्न करने के उद्देश्य से प्रश्न पूछना और चर्चा करना है।

III. **द्वितीयक डेटा** – केस स्टडी से तात्पर्य ऐसे डेटा से है जो किसी व्यक्ति द्वारा द्वितीयक स्रोतों से एकत्र किया गया है।

IV. **दस्तावेज** – कोई भी लेखन जो जानकारी प्रदान करता है, विशेष रूप से वह जानकारी जो आधिकारिक प्रकृति की है।

V. **अभिलेख** – कोई भी ऐसी चीज जो स्थायी जानकारी प्रदान करती है जिस पर भरोसा किया जा सकता है या आधिकारिक तौर पर स्पष्ट जानकारी प्रदान करती है।

सामाजिक विज्ञान के अनुसन्धान में केस स्टडी का महत्व एवं उपयोगिता–5

- इससे गहन अध्ययन सम्भव होता है।
- यह आधार सामग्री संग्रह की विधियों के प्रयोग में लचीला होता है जैसे, प्रश्नावली, साक्षात्कार, अवलोकन आदि।
- विषय के किसी भी पहलू के अध्ययन के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है जैसे, यह एक विशेष पहलू का अध्ययन कर सकता है और दूसरे पहलुओं को शामिल नहीं भी कर सकता है।
- व्यावहारिक रूप से किसी भी प्रकार के सामाजिक परिवेश में यह अध्ययन किया जा सकता है।
- केस स्टडी खर्चीले नहीं होते हैं।

यिन (1989) ने एकल केस स्टडी के निम्नलिखित तीन लाभ बताए हैं।6

- यह सिद्धान्त को चुनौती, विस्तार या पुष्टि करने के लिये एक विवेचनात्मक परीक्षण प्रदान करता है।
- यह अनोखे मामलों के अध्ययन में मदद करता है जो कि न केवल चिकित्सकीय मनोविज्ञान में बल्कि समाजशास्त्र में विचलित समूहों, समस्याग्रस्त व्यक्तियों के अध्ययन में भी लाभप्रद होता है।

यह उन घटनाओं के अध्ययन में भी मदद करता है जो ऐसी स्थिति में घटती हैं जहाँ उनका अध्ययन पहले कभी नहीं हुआ है, जैसे, तटीय प्रदेशों में चक्रवातों के पीड़ितों के पुनर्वास और उनकी समस्याओं का अध्ययन, कृषकों के लिए सिंचाई की नहरों का प्रबन्धन, पर्यावरण असंतुलन आदि। एक केस स्टडी के विपरीत बहु केस स्टडी भी होते हैं जहाँ भली भाँति विकसित सिद्धान्त का परीक्षण करने के लिये अनेक मामलों का अध्ययन किया जाता है। केस स्टडी के अभिकल्प में कितने मामले शामिल किये जाय, यह अध्ययन के अन्तर्गत समस्या के स्वरूप पर निर्भर करेगा तथा उन दशाओं पर भी जिनमें यह घटित होती हैं।

निष्कर्ष :–सामाजिक विज्ञान शोध सामाजिक घटनाओं और सामाजिक समस्याओं से संबंधित होता है। साथ ही सामाजिक शोध की प्रकृति वैज्ञानिक होने के कारण इसमें शोध विशेष उद्देश्यों से प्रेरित होता है। सामाजिक शोध आज के युग में दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया है। शोध में धन और समय दोनों ही लगते हैं फिर भी बहुत से लोग शोध कार्यों से जुड़े हुए हैं। इसका कारण सामाजिक शोध का बढ़ता हुआ महत्व है। सामाजिक शोध को बेहतर ढंग से सम्पन्न कराने में शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत किये गये तथ्यों एवं तथ्य संग्रह की प्रविधि महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सामाजिक विज्ञान के अनुसन्धान में केस स्टडी विधि का महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान समय में सामाजिक विज्ञान के शोध हेतु वैज्ञानिक एवं सटीक निष्कर्ष के लिए केस स्टडी का प्रयोग करना आवश्यक समझा जाता है। केस स्टडी आधुनिक युग में शोध को बढ़ावा देने के लिए एक साकारात्मक विधि है।

संदर्भ सूची :–

1. राम आहूजा, सामाजिक अनुसन्धान, रावत पब्लिकेशनस, जयपुर 302004 पेज नं0–261
2. वही, पेज नं0–264
3. P.V. Young, “Scientific Social Survey and Research,” Page No-127
4. के.बी.एस.मदान, ‘‘शिक्षण एंव शोध अभियोग्यता,’’ पियर्सन इंडिया एजुकेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड 2025 Page No-2.2
5. वाजपेयी, डॉ0 एस0 आर0, सामाजिक अनुसन्धान तथा सर्वेक्षण, किताब घर–कानपुर,. पेज नं0–36
6. Yin, R.K., Case Study Research: Design and Method (revised ed.), Sage Publications, Newbury Park, C.A., 1989.